अथ स्वामीजी श्री रामचरणजी महाराजकी वाणी अणभै लिख्यते

।। प्रथम स्तुति का कवित ।।

नमो राम रमतीत नमो गुरुदेव स्वामी ।
नमो नमो सब सन्त नाम रटि भये जु नामी ।।
जिनके चरणों हेठि रहो नित शीश हमारा ।
तन मन धन अरु प्राण करुं नवछावर सारा ।।
राम संत गुरुदेव बिन नहीं और आधार ।
रामचरण कर जोरि कै वन्दै वारंवार ।। १ ।।
नमो राम रमतीत सकल व्यापक घणनामी ।
सब पौषे प्रतिपाल सबन का सेवक स्वामी ।।
करुणामय करतार करम सब दूर निवारै ।
भक्त विछलता विरद भक्त ततकाल उधारै ।।

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

रामचरण वन्दन करै सब ईशन के ईश ।
जगपालक तुम जगत गुरु जगजीवन जगदीश ॥ २ ॥
आनंद घन सुख राशि चिदानंद कहिये स्वामी ।
निरालम्ब निरलेप अकल हरि अन्तर्य्यामी ॥
वार पार मधि नाहिं कूंण बिधि करिये सेवा, ।
नहिं निराकार आकार अजन्मा अविगत देवा ॥
रामचरण वन्दन करै अलह अखण्डित नूर ।
सूक्ष्म स्थूल खाली नहीं रह्या सकल भरिपूर ॥ ३ ॥
नमो नमो परब्रह्म नमो नहकेवल राया ।
नमो अभंग असंग नहीं कहुं गया न आया ॥
नमो अलेप अछेप नहीं कोई कर्म न काया ।
नमो अमाप अथाप नहीं कोई पार न पाया ॥
शिव सनकादिक शेषलूं रटत न पावै अन्त ।
रामचरण वन्दन करै नमो निरंजण कन्त ॥ ४ ॥

कृपाराम कलि अवतरे जीवन प्रम दर्शन लहे ।
जनकराय सम जान लिप्त होवै कहुं नाहीं ॥
ध्रुव राजत वैकुण्ठ यूंही सब सन्तन माहीं ।
परमारथ परवीण सम पीपा परमानूं ॥
हरिगाथा अंबरीष राम के प्रीये जानूं ।
रामचरण वन्दन करै मायामझि अलिप्त रहे ।
कृपाराम कलि अवतरे जीवन प्रम दर्शन लहे ॥ ५ ॥

गुरु मंत्र

राम नाम तारक मन्त्र, सुमिरै शंकर शेष ।
रामचरण सांचा गुरु, देवै यो उपदेश ।
सदगुरु बक्से राम नाम, शिख धारै विश्वास ।
रामचरण निश दिन रटै, तो नहचै होय प्रकाश ॥

रामजी राम राम महाराज.....

आचार्यश्री स्तुति की साखीयाँ

अणभे पद परकास के, दायक सतगुरु राम ।
अनंत कोटि जनसाहिकी, ताहि करुं परणांम ॥
रमतीत राम गुरुदेवजी, पुनि तिहूं काल के संत ।
जिनकूं रामचरण की, बंदन बार अनंत ॥ १ ॥
सतगुरु रामदयाल जन धन आनँद सुखकार ।
तिनकूं वन्दन रामजन्न, करि हूं नित्त निरधार ॥ २ ॥
अखण्ड राम गुरु संत जन, मंगल मय सुखधाम ।
शीश नाय कर जोरि नित, कर दुल्है परणाम ॥ ३ ॥
सतचित आनंद ब्रह्म राम भरपूर है ।
त्रय अवस्था रहित गुरु सा नूर है ॥
त्रिगुण पास बँध नाहिं, चत्रदास अनूप है ।
परिहाँ कर वंदन विधि, दास एक त्रय रुप है ॥ ४ ॥

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

अज अक्रिय आनंद नित, गुरु संत तद्रुप ।
नारायणदास वंदन करै, लख त्रय एक स्वरुप ॥ ५ ॥
प्रणपति पूरण ब्रह्म कूँ, गुरु संत सिर मोड ।
कर वंदन हरिदास तिन, शीश नाय करि जोड ॥ ६ ॥
नित्य निरंजन रामजी, सतगुरु संत समाज ।
हिम्मत हिरदै धारि के, करो सकल शुभ काज ॥ ७ ॥
गुरु संत परमात्मा, तीनूं रुप समान,
दिलशुद्ध दिल में ध्यान धर, नित्य निवणता ठान ॥ ८ ॥
सतचित्त आनंद राम है, सतगुरु संत मिलाप ।
धर्मदास वंदन कियाँ, मिटेजु तीनूँ ताप ॥ ९ ॥
राम सबै भरपूर है, सतगुरु से गम पाय ।
दयाराम कर जोरि कै, संत चरण चित्तलाय ॥ १० ॥
राम गुरु सर्वज्ञ हो, अधम उधारण राज ।
जगरामदास की राखजो, तुम चरणों में लाज ॥ ११ ॥

राम गुरु अरु संत जन, सब सिद्धि के दातार ।
निर्भय राम वंदन करे, उतर जाय भव पार ॥ १२ ॥
राम गुरु अरु संत पद, उर धर करुँ प्रणाम ।
दास जान लेहूँ शरण, विनवै दर्शनराम ॥ १३ ॥
राम गुरु उर में बसो, संत सबै शिर मोर ।
तिनकूं नितही वंदना, करी है रामकिशोर ॥ १४ ॥
अनंत कोटि जन सिर तपै, रामचरण उरमाहिं ।
आन भरोसो आनबल, नवलराम के नाहिं ॥ १५ ॥

सुखका सागर राम है, दुःखका भंजन हार ।
रामचरण तजिए नहीं, भजिए वारंवार ॥
विपति निवारण सुखकरण, उदय ज्ञान परकाश ।
रामचरण भज राम कूं, सरण हरण जम त्रास ॥

भुजंगी छन्द

नमो गुरुदेवं कृपा पूर कीन्हीं, नमो आप स्वामी अभय गति दीन्ही ।
नमो वीतरागा सुधा नाम पागी, नमो योग ध्यानी समाधि सु लागी ॥
नमो ब्रह्म रुपं अरुपं अलेखं, नमो आप पारं उतारे अनेकं ।
कहै रामचरणं नमोजी दयालम्, कृपा पूर मोपे करी है कृपालम् ॥ १ ॥
कृपा पूरी मोंपे कृपालम् करी है, महाझीण होती दुराशा हरी है ।
कियो दिल पाकं विपाकं निवारे, दियो राम नामं सबे काम सारे ॥
दिये ज्ञान भक्ति सुं निर्वेद साजं, तिहूं लोक भोगं बताये निकाजं ।
दियो तोष पोषं विलोंकं दयालम्, कहे रामचरण नमामी कृपालम् ॥ २ ॥
बडे दानपती सबे रीति पोखे, सदा समदृष्टी कहीं न बिदोखे ।
कहा रंक रावं गिणे एक भावं, देवे चीज रीझं उदारं-स्वभावं ॥
मानो मेघ धारा नहीं भूमि देखे, करे ज्ञान छोलं सदायूं बिसेखै ।
दयावान दाता बडे ही दयालम्, कहे रामचरणं नमामि कृपालम् ॥ ३ ॥

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

महा क्रान्ति भारी तपे ज्यूं दिनेशम्, सदा ज्ञान रुपी विदेही नरेशम् ।
मानूं शांति धीरं वशिष्ठं बखानम्, नहीं मोह माया न कायाभिमानं ॥
लियां जोग वैराग्य भक्ति परा है, सदा मिष्ठ वाचा उचारे गिरा है ।
कोऊ शरण आवे करे प्रतिपालम्, कहै रामचरणं नमामि कृपालम् ॥ ४ ॥
महातेज पुंजं शरीरं बखानम्, सवानूर सानन्द शोभायमानम् ।
गुणातीत स्वामी अकामी अलेखम्, जना मध्य आपै गुरुजी विशेखम् ॥
देवे आप धीरं हरे क्रोध ज्वालम्, द्रवै सोम दृष्टि करंते निहाल् ।
मुखा मधुर हांसी विलासीक ब्रह्मम्, दिपै संत गादी अनादि सुधर्मम् ।
सदा पक्ष सांची अजाची अकालम्, कहै रामचरणमं नमामि कृपालम् ॥ ५ ॥
मै हूं तोर चरणाँ परयो नित्य स्वामी, तुम्हें सानुकूलं भये अंतर्यामी ॥
दई मोहि धीरं अभीरं किये है, दोउ हस्त शीशं दया से दिये है ॥
रखे आप शरणां सकरुणा सुणी है, उदे भाग्य मेरो भलीये बणी है ॥
किये मुक्त रुपा हनी जक्त जालम्, कहै रामचरणं नमामि कृपालम् ॥ ६ ॥
नमो राम रुपं गुरुजी अगाधै, तुम्हैं सेव सानन्द सूं सर्व साधै ।

ब्रह्माईश विष्णादि अवतार धारै, सदा एक महिमा गुरु की उचारै ॥
कहे वेद वेदान्त सिधान्त जेता, तिहूं, लोक मध्ये धरै तन्न तेता ।
निजानंद ध्यानं गुरु को बखानै, कहैं रामचरणं यहै मन्न मानै ॥ ७ ॥
लिपै नांही काहू फणी ज्यूं मणी है, इसी रीति तोलां अनंतां गिणी है ।
सबै घट्ट पूरं मानों ब्योंम रुपा, निराकार स्वामी अनामी अनूपा ॥
एसे गुरु आपं अमापं अतोलम्, नहीं वार पारं अगाधं अडोलम् ।
गुरु राम धामं महा सुक्खदानी, कहे रामचरणं स्तुती बखानी ॥ ८ ॥

सोरठा

मैं हूं शरण तुम्हार शरणा पति गुरुदेवजी ।
कलियुग घोर अन्धार जामें आप दिनेश हो ॥ १ ॥
॥ इति भुजंगी छंद सम्पूर्ण ॥

रामजी राम राम महाराज.....

अथ ग्रन्थ गुरुमहिमा लिख्यते ।।

स्तुति

रमतीत राम गुरुदेवजी, पुनि तिहूं काल के सन्त ।
जिनकूं रामचरण की, बन्दन बार अन्नत (१)

दोहा

शीश धरुं गुरुचरण तल, जिन दिया नाम तत्सार ।
रामचरण अब रैण दिन, सुमरै बारंबार ॥ १ ॥

चौपाई

प्रथम कीजै गुरु की सेव । तासंग लहे निरंजन देव ।।
गुरु किरपा बुधि निश्चल भई । तृष्णा ताप सकल बुझि गई ॥ १ ॥
मैं अज्ञान मतिका अति हीन । सतगुरु शब्द भया परवीन ।।
सतगुरु दया भई भरिपूर । भर्म कर्म सांशो गयो दूर ॥ २ ॥
गुरुकी पूजा तन मन कीजे । सतगुरु शब्द हृदय धरि लीजे ।।
सतगुरु सम दूजा नहीं कोई । जांसू तन मन निर्मल होई ॥ ३ ॥

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

सतगुरु बिन सीइया नहिं कोई । तीन लोक फिरि देखो जोई ॥
नारद पाया गुरु उपदेश । चौराशीका मिटया कलेश ॥ ४ ॥
गुरु बिन ज्ञान कहो किन पाया । बैन सैन करि गुरु समझाया ॥
सतगुरु भक्ति मुक्ति का दाता । गुरु बिन नुगरा दोजग जाता ॥ ५ ॥
गुरुमुख ज्ञान सदा सुख पावै । नुगरा नरके साँच न आवै ॥
नुगरा का कीजे नहिं संग । ज्ञान ध्यानमें पाडे भंग ॥ ६ ॥
सतगुरु साच शील पिछनाया । काम क्रोध मद लोभ गुमाया ॥
गुरु किरपा संतोष हि आया । तृष्णाताप मिटया सुख पाया ॥ ७ ॥
गुरु गोविंद सूं अधिका होई । या सुनि रीस करो मति कोई ॥
प्रथम गुरु सूं भाव बधावै । गुरु मिलिया गोविंद कूं पावै ॥ ८ ॥
दत्त दिगम्बर गुरु चौबीश । सबही का मत धारया शीश ॥
अपनी अकल आप समझाया । मति फुरण कूं गुरु ठहराया ॥ ९ ॥
गुणवंता गुण कदे न भूलै । कृत्यघ्नी दोजग में झूलै ॥
सुगरा गुरु की सैन पिछानै । नुगरा नर वायक नहिं मानै ॥ १० ॥

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

शुकदेव व्यास गर्भजोगेश । गुरु कीया जिन जनक नरेश ।।
जनमत मोह जीति वन गयो । तोभी गुरु बिन काज न भयो ।। ११ ।।
द्वादश वर्ष गर्भ तप कीन्हा । माया सूं मन रती न दीन्हा ।।
पिता ब्यास जन्मतही त्याग्यो । नरपति गुरु सूं सांशो भाग्यो ।।१२।।
त्याग विराग मत्त को पूरो । इन्द्रिय जीत काछ दृढ शूरो ।।
एती लछ अरु गुरुसूं द्रोही । तो वाको दर्श करो मति कोही ।। १३ ।।
वाकै दर्श बुद्धि सब नाशै । ज्ञान हीन अज्ञान प्रकाशै ।।
वा संग गुरु की अवज्ञा आवै । भक्ति हीन होइ नरकां जावे ।। १४ ।।
गुरु भक्ता गुरु शिर पर राखै । गुरुको शब्द कभू नहिं नाखे ।।
वाको संग सदाही कीजे । तन मन अर्प राम रस पीजे ।। १५ ।।
सतगुरु मिल्यां मोक्ष पद पावै । अनंत कोटि जन महिमा गावै ।।
भया निरोग जिनां गुरु गाया । रोग न गया वैद्य बिसराया ।। १६ ।।
सब संता की साख सुनीजे । तो गुरुसूं कपट कदे नहि कीजे ।।
गुरु को ब्रह्म रुप करि जानै । ताकि भक्ति चढै परमानै ।। १७ ।।
गुरु किरपा नर की बुधि पाई । पशू वृति सब दूर गमाई ।।

आप नमै गुरु दीरघ देखै । ता शिख को कृत लागै लेखै ॥ १८ ॥
जो नर गुरु का अवगुण धारै । होय मनमुखी गुरु बिसारै ॥
सो नर जन्म जन्म दुख पासी । गुरु द्रोही जम द्वारे जासी ॥ १९ ॥
गुरु मनुष्य बुधि जानो मत कोई । सतगुरु ब्रह्म बुद्धि सम जोई ॥
सतगुरु सकल काल को काल । शिखों निवाजन दीन दयाल ॥ २० ॥

दोहा

सतगुरु कूं मस्तक घरे, राम भजन सूं प्रीति ।
रामचरण वै प्राणियां, गया जमारो जीति ॥ १ ॥
साचा सतगुरु सेइये, तजिये कुडा मत्त ।
रामचरण साचा मिल्यां, दर्शेगा निज तत्त ॥ २ ॥
गुरुमहिमा सीखै सुनै, हिरदै करै विचार ।
रामचरण तत शोधे ले, सोहि उतरे पार ॥ ३ ॥

इति ग्रन्थ गुरुमहिमा सम्पूर्ण

॥ दोहा ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ २० ॥ सर्व ॥ २४ ॥ ग्रन्थ ॥ १ ॥

अथ ग्रन्थ नामप्रताप लिख्यते ।।

स्तुति

रमतीत राम गुरुदेवजी, पुनि तिहूं कालके सन्त ।
जिनकूं रामचरण की, बन्दन बार अनन्त (१)

दोहा

महिमा नाम प्रताप की, सुनों श्रवण चितलाय ।
रामचरण रसना रटो, तो कर्म सकल झडि जाय ॥ १ ॥
जिन जिन सुमरया नामकूं, सो सब उतरया पार ।
रामचरण जो बीसरया, सोही जम के द्वार ॥ २ ॥

चौपाई

रामनाम कूं जिन जिन ध्यायो, भवकूं छेदि परमपद पायो ।।
शिवजी निश दिन राम उचारे । राम बिना दूजो नहिं धारे ।। १ ।।
पार्वतीकुं राम सुनायो । राम बिना सब झूंठ बतायो ।।

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

सोही राम सुन्यो शुकदेवा । गर्भवासमें लाग्यो सेवा ॥ २ ॥
राम सुमिरि सब मोह निवारयो । मात पिता तज वनहिं सिधारयो ॥
राम प्रताप रम्भा गई हारी । सुमिरत राम कामना मारी ॥ ३ ॥
ब्रह्मापुत्र च्यार सनकादिक । रामनाम के भये सवादिक ॥
रामप्रताप गर्भ नहिं आवै, सुमिरत राम परमसुख पावै ॥ ४ ॥
राम नाम नारद मुनि गावै । हृदय प्रेम अति प्रेह बधावै ॥
शेष रसातल राम पुकारे । रसना लिव कबहूँ नहिं टारै ॥ ५ ॥
उभय सहँस रसना हैं जाके, राम राम रटता नहिं थाकै ॥
नर नारी सुमिरे नहिं रामा । एक ही जीभ भई बेकामा ॥ ६ ॥
रामनाम ध्रुव ध्यान लगावे । बसि वैकुण्ठ बहुरि नहिं आवे ॥
राम भजत छूटा सब कर्मा । चन्द्र रु सूर देय परिकर्मा ॥ ७ ॥
राम राम प्रहलाद पुकारयो । ताको पिता बहुत पचि हारयो ॥
संकट सह्यो पण राम न छांडयो । राम भरोसे मरणों हिं मांडयो ॥ ८ ॥

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

अग्निधार पर्वत सूं राख्यो । सिंह सर्प गज परिहरि नाख्यो ॥
अन्ध कूप में राम बचायो । जन को जश हरि जग दिखलायो ॥ ९ ॥
कोप्यो असुर खड्ग लियो करमें । जनके हित प्रगटयो हरि खंभमें ॥
मारयो असुर भक्ति विस्तारी । जन प्रहलाद की मीच निवारी ॥ १० ॥
राम कहै तिनकूं भय नाहीं । तीन लोक में कीरति गाहीं ॥
राम रटत जम जोर न लागै । राम रटत सांशो सब भागै ॥ ११ ॥
द्विज अजामेल मद मांस अहारी । गणिका रति विषया अति भारी ॥
कर्म करत तृप्ती नहिं भयो । विषय संग आयु क्षीण ह्वै गयो ॥ १२ ॥
अन्त समय जमदूतन घेरयो । राम नारायण सुत के हित टेरयो ।
जमदूतन सूं लियो छुडाई । आपणों जाणरु करी सहाई ॥ १३ ॥
ऐसो पतित और नहिं कोई । राम कहयां वाकी गति होई ॥
अजाण भज्यां का एह सहनाणाँ । तो जानि भज्यां का कहा बखाँणा ॥ १४ ॥
गणिका एक गरक कर्मन में । हरि की शंक नहीं कछु मन में ॥

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

जाकूं सन्ता सैंन बतायो । राम राम कहि कीर पढायो ॥ १५ ॥
सुवा पढावत विषया भूली । राम प्रताप सुख सागर झूली ॥
राम प्रताप जुग जुग में गावै । मूरख नर कोई भेद न पावै ॥ १६ ॥
हनूमान अंजनिको पूता । रामचन्द्र को कहिये दूता ॥
सो भी रसना राम उचारयो । राम प्रताप कारज सब सारयो ॥ १७ ॥
रामचन्द्र जब लंक सिधाया । सिन्धु तरण की करै उपाया ॥
विश्वामित्र कहै समुझाई । रामनाम लिखि पथर तराई ॥ १८ ॥
ऐ देखो नहकेवल कर्ता । अवतारांका कारज सर्ता ॥
भक्तहेतु अवतार हि धरही । राम रटयां सब कारज सरही ॥ १९ ॥
वाल्मीकि बहु जीव सताया । जीव शीव का भेद न पाया ॥
संतां शब्द मरा कहिं भाख्यो । गहि विश्वास हृदय धरि राख्यो ॥ २० ॥
तीजे शब्द उलटि भये रामा । वाल्मिकि का सरिया कामा ॥
शतकोटी रामायण गाई । राम प्रताप असो है भाई ॥ २१ ॥

बहूरि कहूं पँडवांका जिज्ञकी । महिमा करी कृष्ण हरिजन की ॥
रामप्रताप पंचाइण वाज्यो । जोग जिज्ञ जप तप सब लाज्यो ॥ २२ ॥
राम प्रताप नीच भयो ऊंचो । राम बिना ऊंचो कुल नीचो ॥
रामजनाँ की भ्रान्ति न कीजे । भ्रान्ति किया नर नरक पडिजे ॥ २३ ॥
गहि गज ग्राह समँदमैं घेरयो । राम राम ऊंचै स्वर टेरयो ॥
रटत राम छूटया सब फंदा । मुक्त भयो तत्काल गयंदा ॥ २४ ॥
फंदमें पडयाँ पशु भी ध्यावै । नर गृह बंध्यो सुद्धि नहीं पावे ॥
जाकूं कैसें राम उबारे । जन्म जन्म भवसागर डारे ॥ २५ ॥
राजा जनक जज्ञ अति कीन्हो । नव जोगेश्वर दर्शन दीन्हो ॥
राजा मन को सांशो बूझै । तुमकूं भक्ति भेद सब सूझै ॥ २६ ॥
प्रभू हमकूं देहु बताई । तुम बिन मनको भर्म न जाई ॥
और सकल साधन भ्रम नाख्यो । सत्य शब्द एक रामहि भाख्यो ॥ २७ ॥
नरप परीक्षित भयो परायण । शुकदेव सूं शब्द पिछायण ॥

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

राम राम दिन सात पढायो । तजि नरलोक परम पद पायो ॥ २८ ॥

केता कहूँ कहत नहिं आवै । हरि हरिजन को पार न पावे ॥

च्यारि जुगन की कौन चलावे । असंख्य जुगाँ बिच राम हि गावे ॥ २९ ॥

राँका बांका नामदेव दासा । जिनकै एक राम विश्वासा ॥

राम बिना दूजो नहिं जांणे । जग में रहै रु उलटी तांणे ॥ ३० ॥

तुलसी पत्र लिखयो रक्कारा । ता सम और नहीं कोई भारा ॥

सबही द्रव्य धर्म भयो हलको । राम बिना भोडल को भल को ॥ ३१ ॥

भक्ति भानु प्रकटे रामानंद । ताकै रहै सदा उर आनंद ॥

द्वादश शिष्य भये बडभागी । जिनकी प्रीति राम सूं लागी ॥ ३२ ॥

दास कबीरा भये उजागर । राम प्रताप भक्ति का आगर ॥

राम राम रटि राम समाया । बहु जीवन कूं भेद बताया ॥ ३३ ॥

कृष्ण दास पय हारी कहिये । राम बिना दूजो नहिं गहिये ।

अग्र श्याम जंगी अरु तुरसी । देव मुरारि भया बंध कुरसी ॥ ३४ ॥

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

कीता घाटम कूबा केवल । राम राम रटि भया निकेवल ।।
राम राम रटियो हरिदासा । जक्त जाल सूं भयो उदासा ।। ३५ ।।
ज्ञानी गर्क भया अरु परसा । राम सुमिरि जग जाण्यों निरसा ।।
दादू दास जन्म कुल नीचै । राम रटत पहुँच्यो पद ऊँचै ।। ३६ ।।
नीच ऊंच कुल भेद विचारै । सोतो जन्म आपणों हारै ।।
संतां के कुल दीशै नाहीं । राम राम कह राम समाहीं ।। ३७ ।।
परशुराम खोजी बाजींदा । हरिदास जन हरि का बंदा ।।
पहली नीचा कर्म कमाया । राम सुमिरि उज्वल पद पाया ।। ३८ ।।
संतदास कलि भया कबीरा । राम भजन रत संत सुधीरा ।।
पर उपकार धरी जिन देहा । छके ब्रह्म रस रहै विदेहा ।। ३९ ।।
कृपा राम संत का बाला । ज्यूं कबीर घर भया कमाला ।।
दया देश परमारथ पूरा । निर्मल चित्त भजनकूं सूरा ।। ४० ।।
जिनकी किरपा हम निधि पाई । राम नाम की कीरति गाई ।।

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

ऐसो कुँण जो कीरति गावे । हरि हरि जन को पार न पावे ॥ ४१ ॥
सायर कहो एसो कुँण थागे । जितो पियो अपनी तृष भागे ॥
राम संतां का अंत न आवै । आप आप की बुधि सम गावै ॥ ४२ ॥
राम प्रताप सुनो अब एसो । भजताँ भयो कहूं सो तेसो ॥
राम रटत गुप्ता रस चाखै । संत शब्दां में प्रगट भाखै ॥ ४३ ॥
प्रथम राम रसना सूं गावै । मनकूं पकडि एक घर लावै ॥
राखे सुरति शब्द ही माहीं । शब्द छाँडि कहुँ अंत न जांही ॥ ४४ ॥
तब रसना शिर छूटै धारा । चलै अखंड नहिं खंडै लगारा ॥
जल जीवन की श्रद्धा नांही । मति यो अमृत दूरि होई जांहीं ॥ ४५ ॥
रस पीवत क्षुधा सब भागी । कठाँ शब्द टगटगी लागी ॥
नाडिनाडि में चलै गिलगिली । सुखधारा अति बहै सिलसिली ॥ ४६ ॥
मुखसूं कछू न उचरे बैना । लग्या कपाट खुलै नहीं नैना ॥
श्रवणाँ चर्चा सुणैं न कोई । कंठ ध्यान यह लक्षण होई ॥ ४७ ॥

कंठ के ध्यान कँमकँमी जागै । रोम रोम सीतंग सो लागै ॥
हियो गद्‌गदे श्वास न आवै । नैंणा नीर प्रवाह चलावै ॥ ४८ ॥
एक दिवस इक भया तमासा । कंठ हृदा बिच उठयो हुलासा ॥
ज्यूं पाला की डोरणि छूटी । हिरदे सीर सुखम रस उठी ॥ ४९ ॥
शब्द ब्रह्म हिरदै किया वासा । ज्यूं रैंण अंधेरी चंद्र प्रकाशा ॥
भर्म कर्म सांशो गयो भागी । हिरदै ध्वनी अखंड लिव लागी ॥ ५० ॥
कहा कहूं या सुख की महिमा । और सुख सब दीशे पलमा ॥
हिरदै ध्यान ध्वनी जब होइ । दूजो साधन रहे न कोई ॥ ५१ ॥
हिरदासूं लै धरणी गई । नाभिकमल में चेतन भई ॥
शब्द गुंजार नाडि सब जागे । रोम रोम में होइ रही रागे ॥ ५२ ॥
नौसे नारी मंगल गावे । तहाँ मन भँवरा अति सुख पावे ॥
शीतल भई सबै ही काया । शब्द ब्रह्मरस अमृत पाया ॥ ५३ ॥
अब तो शब्द गगन कूं चढिया । पछिम घाटि होइकै अनुसरिया ॥

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

घाटी बीस मेरु की छेकी । इकबीसै गढ गया विशैखी ॥ ५४ ॥
पहिली बैठा त्रिकुटी छाजे । जाके उपर अनहद बाजै ॥
त्रिवेणी तट ब्रह्म न्हवाया । निर्मल होय आगे कूं ध्याया ॥ ५५ ॥

दोहा

इंगला पिंगला सुखुमणा, मिले त्रिवेणी घाट ।
जहां झाझे जल झूलि के, निर्मल होय निराट ॥ १ ॥
अब त्रिवेणी न्हाई कै, कीया गगन प्रवेश ।
तीन लोक सूं अलध सुख, यो कोई चौथा देश ॥ २ ॥

चौपाई

अब चौथे घर पहुँता जाई । जहाँ का चहन मैं कहूं सुणाई ॥
घरर घरर अनहद घररावै । परम ज्योति दामणि भलकावे ॥ १ ॥
सुषुमण नीर लूंब झडि लाई । भीजत सुरति गर्क होइ जाई ॥
अर्ध उर्ध जहां कमल प्रकासा । सूरति भवंर होइ करत बिलासा ॥ २ ॥

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

घुरै अखण्ड अनाहद बाजा । प्राण पुरुष चहां तख्त बिराजा ।।
झिलिमिलि झिलिमिलि नूर प्रकासै । अनंत कोटि रवि प्रकटया भासै ॥ ३ ॥
यातो बात अतौल है भाई । मुख सूं कहयां तोल व्है जाई ।।
पवन कहो कैसे गह हाथा । कैसे भरै गगन की बाथा ।। ४ ।।
रुपवर्ण कैसो तडका को । ऐसो कहा बखानो जाको ।।
हाक वाक रहे कहत न आवै । पहुंच्या होइ सोही भल पावै ॥ ५ ॥

दोहा

अनहद गरजै नभ झरै । दामिनि ज्योति उजास ।
रामचरण सुनि सायराँ । हंसा करत निवास ॥ १ ॥

चौपाई

सायर तट हंस बैठा जाई । सायर हँस में रह्या समाई ।।
ओत पोत भया द्वैत न दर्शै । संत गरक, ब्रह्म सुख कूं पर्शै ॥ १ ॥
ब्रह्म पश्यांकी दशा बताऊं । बाहिर के लक्षण पिछनाऊं ।।
जाके रंक एक ही राउ । माया सेती करे न भाउ ।। २ ।।

जाके अन्दर ब्रह्म रस बूठा । सकल बिह्वार होइ गया झुठा ।
कनक कामिनी करै न नेहा । छक्या ब्रह्म रस रहै विदेहा ॥ ३ ॥
जैसे बूंद मिली सायर में । कैसे पकडि सकै कोइ कर में ॥
जीव ब्रह्म मिलि भया समाना । ब्रह्म मिल्यां कर्म करै न आना ॥ ४ ॥

दोहा

एह चहन दरश्याँ विनां, मति कोइ छोडो ध्यान ॥
रामचरण इक राम बिन, सब ही फोकट ज्ञान ॥ १ ॥
रामचरण भज राम कूं, ब्रह्म देश कूं जाय ॥
जहां जम जूरा का भय नहीं, सुखमें रहे समाय ॥ २ ॥
रामचरण कहे राम को, बडो प्रताप जग मांहि ॥
अनंत कोटि जिन उधरया, भजै सो भर्मे नांहि ॥ ३ ॥

इति ग्रन्थ नामप्रताप सम्पूर्ण ॥

॥ दोहा ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ ६४ ॥ सर्व ॥ ७२ ॥ ग्रन्थ ॥ २ ॥

अथ ग्रंथ शब्दप्रकाश लिख्यते ।।

स्तुति

रमतीत राम गुरुदेवजी, पुनि तिहूंकाल के संत ।
जिनकूं रामचरण की, बन्दन बार अनंत (१)

दोहा

राम नाम तारक मन्त्र । सुमिरै शंकर शेष ।।
रामचरण साचा गुरु । देवे यो उपदेश ।। १ ।।
सतगुरु बकसे राम नाम । शिख धारै विश्वास ।।
रामचरण निशि दिन रटै । तो नहचै होय प्रकाश ।। २ ।।

चौपाई

अब सुणियो सब साधु सुजाना । राम भजन का करुं बखाना ।।
प्रथम नाम सतगुरु सूं पाया । श्रवणां सुनिके प्रेह उपजाया ।। १ ।।

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

पुनि रसना की श्रद्धा जागी । राम रटनि निशिवासर लागी ।।
दूजी आशा सकल बुहारी । तब राम नाम में सुरति ठहारी ।। २ ।।
पद्मासन निश्चल मन कीया । नासा निरत धारि घर लीया ।।
श्वास उश्वासां धवँण लगाई । आरति करिकै विरह जगाई ।। ३ ।।
रसना अग्र खुली इक सीरा । प्रथम वाको पयसो नीरा ।।
रटतां रटतां भयो मिठास । हर्ष भयो आयो विश्वास ।। ४ ।।
केई दिवस रसना रस गटक्यो । पीछे शब्द कण्ठ में अटक्यो ।।
कण्ठ स्थान बहुत कठिणाई । मुख सूं वचन न बोल्यो जाई ।। ५ ।।
खान पान पैं रुचि रहे थोरी । मारग रुक्यो जाय कह वोरी ।।
क्षीण शरीर त्वचा सकुचानी । नीली नस दीसै झलकानी ।। ६ ।।
पीरो वदन नेतराँ लाली । मुकुर ज्योति ज्यूं दिपै कपाली ।।
चलै कँमकँमी रुं थररावे । छाती रुँधै श्वास न आवे ।। ७ ।।
एसी विधि विरहनि की होई । विरहि जाणै कै सतगुरु सोई ।।

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

एक दिवस ऐसी बनि आंही । शब्द सरक गयो हिर्दा मांही ॥ ८ ॥
परम सुक्ख हिर्दै परकाशा । ज्यूं रवि कीनो तम को नाशा ॥
सहजै सुमरण हिरदै होई । बाहिर भेद न जानै कोई ॥ ९ ॥
सोवत जागत डोरी लागी । वन वस्ती की शंका भागी ॥
रसना जप्यां अजप्पा पाया । बाहिर साधन सकल बिलाया ॥ १० ॥
जाग्यो प्रेम नेम रहयो नांही । पाई राम धाम घट मांही ॥
उर अस्थान पाय विश्रामा । शब्द किया जाय नाभि मुकामा ॥ ११ ॥
नाभिकमल में शब्द गुंजारे । नौसे नारी मंगल उचारे ॥
नाभिहोद काया वन पीवे । ता रस साधू जुग जुग जीवे ॥ १२ ॥
रोम रोम झुणकार झुणं कै । जैसे जंतर ताँत ठुणंकै ॥
माया अक्षर यहां विलाया । ररंकार इक गगन सिधाया ॥ १३ ॥
पश्चिम दिशा मेरु की घाटी । बीसूं गांठि घोर सें फाटी ॥
त्रिकुटी संगम कीया स्नाना । जाइ चढया चौथे अस्थाना ॥ १४ ॥
जहां निरंजन तख्त विराजै । ज्योति प्रकाश अनंत रवि राजै ॥

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

अनहद नाद गिणत नहिं आवे । भांति भांति की राग उपावे ॥ १५ ॥
स्रवै सुषुम्णा नीर फुँहारा । शून्य शिखर का यह विव्हारा ॥
झरि पणँग मोती सा ढलकै । जाकी ज्योति अरुण सी भलकै ॥ १६ ॥
सागर जहां बिना धर भरिया । हंसै वास तास मधि करिया ॥
सुखमण मोती करै अहारा । निज हंसा का एही चारा ॥ १७ ॥
शुँन सायर हंस का वासा । भव सागर सुख भया उदासा ॥
दरिया सुख को अंत न आवै । छीलर काल बाज झपटावै ॥ १८ ॥
सुख सागर मिलि सुख पद पाया । सो शब्दां मैं कहि समझाया ॥
बिन देख्यां परतीत न आवै । तासूँ कैसे भेद बतावै ॥ १९ ॥
अर्ध उर्ध कमला चहां फूल्या । भँवररुप होई हंसा झूल्या ॥
भंवर गुंजार गगन गिर्णाया । होय मस्त अलि तहां लुभाया ॥ २० ॥
ऐसो पद विरला जन पावै । सो भवसागर नाहीं आवै ॥
राम रटयां का यह प्रकाशा । मिल्या ब्रह्म पद भव भया नाशा ॥ २१ ॥
रामचरण कोई राम रटेगा । सो जन एही धाम लहेगा ॥

राम राम निशिवासर गासी । सो नर भवसागर तिर जासी ॥ २२ ॥
राम नाम बिन आन उपाई । ज्यूं डूल्यां का खेल कराई ॥
बालक वेलू मंदिर बणाया । तामें वसि कूंणै सच पाया ॥ २३ ॥
रामभजन बिन खाली करणी । ज्यूं बिन बीज सुधारी धरणी ।
राम बीज साधन हल हाकै । तो रामचरण खेती फल पाकै ॥ २४ ॥

दोहा

वरणि कहयो संक्षेप सो, दरिया कैसो पार ।
जिन परशी या धाम कूं, सो लीज्यो संत विचार ॥ १ ॥
रामचरण रटि रामनाम, पाया ब्रह्म विलास ।
ई साधन कोई लगसी, जाकै होसी शब्दप्रकास ॥ २ ॥

इति ग्रन्थ शब्दप्रकाश सम्पूर्ण ॥

॥ दोहा ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ २४ ॥ सर्व ॥ २८ ॥ ग्रन्थ ॥ ३ ॥

रामजी राम राम महाराज.....

अथ ग्रंथ चिन्तावणी लिख्यते ।।

स्तुति

रमतीत राम गुरुदेवजी, पुनि तिहूं काल के संत ।
जिनकूं रामचरण की, बन्दन बार अनंत (१)

दोहा

प्रथम बंदन गुरुदेव कूं, पुनि अनंत कोटि निज साध ।
कहूँ एक चिन्तावणी, द्यो वाणी विमल अगाध ।। १ ।।
बंधे स्वाद रस भोग सै, इन्द्रयां तणे अरत्थ ।
उन जीवन कै चेतबे, करुं चिन्तावणी ग्रंथ ।। २ ।।
रामचरण उपदेश हित, कहूं ग्रंथ बिस्तार ।
परयो प्रांणी भव कूंप मैं, सो निकसै अर्थ विचार ।। ३ ।।

चामर छंद

दिवाना चेतरे भाई तुजि शिर गजब चलि आई ।
जरा की फोज अति भारी, करै तन लूटि कै ख्वारी ॥ १ ॥
सांई बेग अपणा ध्याय, पीछै जरा दाबै आय ॥
तजि संसार का सब धन्ध, ये तो सही जम का फंद ॥ २ ॥
अब तूं राम रसना गाय, बीतो जन्म अहलो जाय ।
तेरा जन्म की सुण आदि, मूरख खोईये नहि बादि ॥ ३ ॥
पाई दुर्लभ मिनखा देह, अब हरि सुमर लाह्या लेह ।
गाफिल होय मति भाई, अवसर बहुरि नाहि पाई ॥ ४ ॥

दोहा

बहुत कष्ट करि पाईयो, मिनख जन्म अवतार ।
ताहि सुफल करि लीजिये, भज कै सिरजनहार ॥ १ ॥

नरतन कूं सब सुर चहै, ब्रह्मा करत हुलास ।
रामचरण यासूं लहै, ब्रह्म ज्ञान परकाश ॥ २ ॥

चामर छंद

परथम पिता कै घट जाय, द्वितिये मात कै गर्भ आय ।
धरियो नीतकै संग तोय, तामैं बहुत भृष्टा होय ॥ १ ॥
अैसो गर्भ का कहुं दुःख, तामें रती नांही सुख ।
आंतां रह्यो तूं लिपटाय, नांही श्वास लीयो जाय ॥ २ ॥
ऊंधो शीश उधै पांव, जठरा अग्नि को बहु ताव ।
तामै कृमी चूंटयां खाय, जहां तूं रह्यो हरि कूं ध्याय ॥ ३ ॥
अब तूं काढि सांई मोहि, निशदिन बीसरुं नहि तोहि ।
यो दुख बहुत है भारी, अबमैं शरण हूं थारी ॥ ४ ॥
तादिन पिता नांही माय, कासूं कहै सुख समझाय ।

जादिन नही भाई बंध, ता दिन सगा नहि सनमंध ॥ ५ ॥
जादिन एक दीनानाथ, ता बिन और नांही साथ ।
अब कै काढि मोकू देव, निशदिन करुंगो हूं सेव ॥ ६ ॥
तुजि बिन आंन जाचूं नांहि, राखूं सुरति तुजही मांहि ।
मैं तो बचन को साचो, मुज पर महर करि बाचो ॥ ७ ॥

दोहा

गर्भ कोल काठा किया, जीव दांन के मुज्ज ।
आठ पहर चोसठ घडी सांई सुमरुं तुज्ज ॥ १ ॥
आठ पहर सुमरत रहूं, साई श्वासै श्वास ।
अरज करुं कर जोडकै, मेटो राम तरास ॥ २ ॥
रामचरण संकट पडयां, जीव करै सब फरियाद ।
रँचेक कबहू सुख लहै, तो बचन जाय सब बाद ॥ ३ ॥

चामर छंद

अबतैं जन्म लीयो आय, तादिन कष्ट अधिको पाय ।
जैसे जंति काढ तार, तादिन लही पीड अपार ॥ १ ॥
माता गई आपो भूल, निकस्यो रुधिर कै संग झूल ।
झेल्यो एक कपडा मांहि, अब हरि चींत आवै नांहि ॥ २ ॥
बधावा बाप कै गावै, कुटुंबी बहुत सुख पावै ।
नांन्हो पालकै झूल्यो, अन्तरगत धणी कूं भूल्यो ॥ ३ ॥
वारण बेगि आई चाल, घर घर बंधै बांदरवाल ।
बधाई नेवगी पावै, भलो दिन आजको भावे ॥ ४ ॥
भूवा ढूंढ ले आई, स्वारथ आपकै ध्याई ।
भतीजो गोदि मैं लीन्हो, हिरदो प्रेम सूं भीनो ॥ ५ ॥
फली है साख अब म्हारी, करै छी आश हूं थारी ।

लेस्यू दूझती झोटी, शरीरां सबल सी मोटी ॥ ६ ॥
ये सब स्वारथखी है मिंत, अब तैं दियो इन सैं चित्त ।
इनकी गोदि मैं खैले, हाथूं हाथ मैं झेलै ॥ ७ ॥
पीवै माय को अब क्षीर, जासूं पुष्ट होय शरीर ।
जननी देखिकै जीवै नहीं मन और सूं पीवै ॥ ८ ॥
चरणां चालबा लागो, फैरे घर आंगणै भागो ।
रमै जाइ बालकां कै साथ, लकडी गेडियो गह हाथ ॥ ९ ॥
अब उठि बाप संग चाल्यो, अपणा कि सब मैं घाल्यो ।
किया है ब्याह्व का साजा, बाजै आंगणे बाजा ॥ १० ॥
सब मिल कियो अैसो सूल, बांध्यो गृह दुख को मूल ।
दुलहनि भावती आई, निशदिन चित्त में भाई ॥ ११ ॥

दोहा

वर्ष चतुर्दश को भयो, अब तरुणापा की बेस ।
तरुणी सेती मन बंध्यो, नहीं भक्ति परवेस ॥ १ ॥
बालपणो खोयो ख्याल मैं, तरुण अंधेरी बेस ।
रामचरण गुरु ज्ञान को, लगै नहीं उपदेश ॥ २ ॥
बालक बुधि उपजी नहीं, मात पिता सूं हेत ।
खान पान रुचि पायकै, हरि सूं भयो अचेत ॥ ३ ॥

चामर छंद

कियो नारि सूं अब हेत, माता पिता कूं दुख देत ।
चालै आपणे जोरे, तरुणी चित्त कूं चोरै ॥ १ ॥
काठो झूलणो भावै, ढीलो दाय नहि आवै ।
बांई पागडी बांधै, पला दोइ लटकता कांधै ॥ २ ॥

दुपटो केसरयां कीयो, पटको कमर कसि लीयो ।
बनाती मोचडी पहरै, सादी और की चहरै ॥ ३ ॥
मेल्है धमकि धरणी पाव, बागां बावडयां अति चाव ।
कसूंबा घोटि कै पीवै अमल बिन पलक नहि जीवै ॥ ४ ॥
नारी पारकी ताकै, नैणां कसर की झांकै ।
अैसो अंध बेईमान, कीयो कामना हैरान ॥ ५ ॥
छाया निरखतो चालै, बाचा गर्भ की पालै ।
नागरपान सूं अति जोख, बीडी लियां पावै पोख ॥ ६ ॥
मूंछा अधिक अणियाली, जुलुप्या सोहवती काली ।
सूंधा अतर सूं भीनी, बींदी भाल पर दीनी ॥ ७ ॥
हलावैं कांन मैं मोती, गिणै नहिं दूबला गोती ।

कर की आंगल्यां बींटी, गला मैं मादल्या कंठी ॥ ८ ॥
न्यारो बाप सूं होई, तिरिया पुरुष रह होई ।
माया सर्व है मेरी, हवेली खोसल्यूं तेरी ॥ ९ ॥
सनेही सासरया भावै, कुटुंबी देखि दुख पावै ।
माता पिता कूं दे गारि, बोलै नहीं शब्द विचार ॥ १० ॥
तृष्णा लोभ की अति लाय, धन कूंफिरै चहुंदिशि ध्याय ।
कामी कुटिल मति को हीण, मुरख विषय में परबीण ॥ ११ ॥
हरि को नाम सुमरै नांहि, इसि विधि जन्म अहलो जांहि ।
बाचा गर्भ की भूल्यो, सुख संसार कै झूल्यो ॥ १२ ॥
करै नहि नारी कूं न्यारी, हिरदै बसि रही प्यारी ।
कोई भक्ति की भाखै, तासूं बैर करि राखै ॥ १३ ॥

दोहा

राम भक्ति जांणै नही, कर्मा सूं हुंसियार ।
यह तरुण तन अवस्था, बोवै काली धार ॥ १ ॥
वर्ष पचीशां पर भयो, अब ज्वांनी का जोर ।
सुत कन्या सूं हित कियो, निजर न आवै और ॥ २ ॥

चामर छंद

पचीसा ऊपरै हूओ, कर्मा हेत पचि मूवो ।
अपणा गृह को शांसो, न जांणै भक्ति को आसो ॥ १ ॥
धन की चातुरी जांणै, निंदा नाम की ठांणै ।
राखै जगत को नातो, तोडयो नाम को तांतो ॥ २ ॥
जवांनी जंमकी दासी, लियां कर विषै की पासी ।
किया बसि जीव घेरे घाल, नहिं कौई सकै जवांनी पाल ॥ ३ ॥
मूरख विषय सूं रातो, फिरै घर धन्ध मैं तातो ।

हरि की बात नहि भावै, साधू देखि जल जावै ॥ ४ ॥
अपणा स्वारथां खडो, हरि की भक्ति सूं कूडो ।
करै नहि साध को संगा, अंतरगत जगत को रंगा ॥ ५ ॥
मैरे कबीलो भारी, मो बिन होय सब ख्वारी ।
में तो सबन को प्रतिपाल, भासैं नही शिर पर काल ॥ ६ ॥
करतां कर्म सब दिन जाय, सुपनै सुक्ख नांही पाय ।
लियो सब आपणै शिर भार, कबीलो चले नांही लार ॥ ७ ॥
झूठो मोह बांधै काहि, तेरे देखता सब जाहि ।
तेरो बाप कहां भाई, इसि बिधि छोडि तूं जाई ॥ ८ ॥
साचो सार है इक राम, ता बिन जगत सब बेकाम ।
जोबन पांह्वणों भाई, दिन दश देखतां जाई ॥ ९ ॥
काचा कली कासा रंग, जोबन भक्ति पाडै भंग ।
बुढापो शीश पर आयो, जोबन देखि थररायो ॥ १० ॥

सबही लूटि लेसि माल, करसी बुढापो बेहवाल ।
कुटुंबी कार नहि मांनै, तिरिया शंकनहि आंनै ॥ ११ ॥

दोहा

चालीसां कै उपरै, वृद्ध अवस्था होय ।
चिंता चितकूं ग्रासि है, निशदिन बाढे सोय ॥ १ ॥
अमरबेलि ज्यूं वृक्ष को, चूंस लियो सब तंत ।
रामचरण यूं जगत को, लियो कबीलै अंत ॥ २ ॥

चामर छंद

अब तो चेतरे अन्धा, घर कां फेरिया कन्धा ।
नारी करै नांही नेह, सुत का वारणा नित लेह ॥ १ ॥
तन को घटि गयो जोरो, दुनिया सब कहै भोरो ।
बेटा बोल मांनै नांहि, ऊठे कलपना मन मांहि ॥ २ ॥
तन की त्वचा सल पडिया, नैणां नीर अति झरिया ।

पलटयां श्याम सबही केस, सोतो शुक्ल हूवा भेस ॥ ३ ॥
माथो हालणै लागो, करां को जोर सब भागो ।
पगांमैं पडत है आंटी, होइ गई देहली घाटी ॥ ४ ॥
श्रवणां सुणै नांही बैंण, सूझै झांतलो सो नैंण ।
बाचा ठीक नहि बोलै, मनसा पडि गई झोलै ॥ ५ ॥
मुखमैं दांत नांही डाढ, देही खडखडै सब हाड ।
जठरा अग्नि भी भागी, बुढा की क्षुधा नहि जागी ॥ ६ ॥
भोजन स्वाद नहि लागै, मूरख रोय रोय त्यागै ।
घरमें हुकम चालैं नांहि, चुगली खाय पंचां मांहि ॥ ७ ॥
बेटां कटकडी कीन्ही, खटोली पोलमैं लीन्ही ।
मर भी जाय नहि डाकी, न जांणा किता दिन बाकी ॥ ८ ॥
प्यासां जल नहीं पावै, बैठण ढंग नहीं आवै ।
करि है कल्पना भारी, सबकूं, देत है गारी ॥ ९ ॥

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

छोरां हांसि करि भागै, जिनको डोकरो लागै ।
नहीं कोइ साहि को करता, इसि विधि आपदा भरता ॥ १० ॥
फाटो गूदडो, दियो भुगतै आपणो कीयो ।
धणी की चूक है भारी, जासूं भई है ख्वारी ॥ ११ ॥
बाचा चूकियो अज्ञान, कीयो नांहि हरि को ध्यान ।
बोल्यो गर्भ मांही बोल, नीसर भूलियो सब कोल ॥ १२ ॥
कुटुंबी आपणा कीया, बुढापै दूर करि दिया ।
झाडै खाट में जावै, इसा दुख भजन बिन पावै ॥ १३ ॥
अब तो भई पूरण आव, जम कै दूत घाल्यो घाव ।
आयो सांवठो साथा, नहीं दोई च्यार की बाता ॥ १४ ॥
आवत देख बिल्लायो, भयो जम दूत को भायो ।
बुलावै आपणी नारी, खरी तूं भावती म्हारी ॥ १५ ॥
बूलावै सैंन सूं पूता, लियो मोहि पकड जम दूता ।

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

करो कोइ साहि अब म्हांकी, करी छी बैठ मैं थांकी ॥ १६ ॥
दुख मैं निकट नहि आवै, टलि टलि दूर होइ जावै ।
उलटी करै सब हांसी, खडो रहो बहुत दुःख पासी ॥ १७ ॥
जोबन किया कर्म रु खोट, तातें सहै जम की चोट ।
पासी पडी गल कै मांहि, तो भी मोह छाडै नांहि ॥ १८ ॥
जम का दूत ले गया मार, पहुंच्यो धर्म के दरबार ।
कुटुंबा पालयो आयो, जिन हरि नाम बिसरायो ॥ १९ ॥

दोहा

पकडि दूत जम लेगया, राखि सक्यो नहि कोय ।
रामचरण झूंठो जगत, अंत रह्या सब रोय ॥ १ ॥

चामर छंद

अब तो मरि गयो पापी, राख्यो रैंण में छापी ।
गामैं में डर भयो भारी, लागै रैण या खारी ॥ १ ॥

कुटुम्बी कपट सूं रोवै, हिरदै अधिक सुख होवै ।
मिटयों है आज दुख भारी, निशदिन काढतो गारी ॥ २ ॥
राखी रोकि आधी पोलि, उज्जवल करो लीप रु धोलि ।
हमारे आज अति ही सुक्ख, बूढो ले गयो सब दुःख ॥ ३ ॥
याकूं बाल आवो बीर, लागी छोति अधिक शरीर ।
पीछे नीर मैं न्हाया, दिवालय होय करि आया ॥ ४ ॥

दोहा

जीवत एता दुख लह्या, विना भज्यां भगवंत ।
अब चौरासी जूंणि मैं, भुगतै कष्ट अनंत ॥ १ ॥
कहा कहूं या जगत सूं, मानै नहीं लगार ।
सबही देखत आत है, भजै न सिरजनहार ॥ २ ॥
मुख फेरै हरि भक्ति सूं, सनमूख रहे संसार ।
रामचरण वे मानई, झूलै नरक मझार ॥ ३ ॥

चामर छंद

कहूं अब नरक का बहु भेद, तामैं जीव पावै खेद ।
अष्टाबीश कुण्ड भारी, झूलै अधम नर नारी ॥ १ ॥
थांभा सारका ताता, तिन सूं भरावै बाथा ।
रहयो तूं नारि सू लिपटाय, सो अब थंभ भेटो आय ॥ २ ॥
सरिता रुधिर की बहु धार, तामैं बहै जीव अपार ।
कांटा सारका शूला, ता पर चालरे भूला ॥ ३ ॥
हरि की राहा नहिं चाल्यो, गुरु का शब्द कूं न पाल्यो ।
तासूं चलो कांटा मांहि, यो दुख मिटै कबहू नांहि ॥ ४ ॥
स्वारथ हेत कीया पाप, तासूं नरक की बहु ताप ।
हिंसा बहु कीन्ही बीर, बदलै सहै दुःख शरीर ॥ ५ ॥
हरि की सुणी किरति नांहि, सीसो ढूलै श्रवणां मांहि ।
रसना राम नहि गायो, विष हर जीभ लटकायो ॥ ६ ॥

हिरदै ध्यान नहि धारयो, अन्तर रोग बिस्तारयो ।
कर सूं कियो सुकृत नांहि, गोला दिया हाथां मांहि ॥ ७ ॥
कियो नहि साध को दीदार, निजरयां मेख मारै सार ॥
दर्शण जात असलाक्यो, बेलू तप्ति मैं न्हांख्यो ॥ ८ ॥
दुख तो बहुत है भाई, कहां लग कहूं समझाई ।
कहतां ओड नहिं आवै, दुख को पार नहि पावै ॥ ९ ॥

दोहा

लख चौरासी भुगततां, बीत जाय जुग च्यार ।
पीछै नरतन पायगा, तातैं राम सँभार ॥ १ ॥
राम राम रसना रटो, पालो शील संतोष ।
दया भाव क्षम्या गहो, रहो सकल निर्दोष ॥ २ ॥
यो झुठो संसार है, झूठ कुटुंब को हेत ।
झूठै मृग जल ध्याय कै, भूल्यों मूढ अचेत ॥ ३ ॥

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

चामर छंद

अब मैं देहुं झुठ बताय, सुणियो प्रीति सूं चित्त लाय ।
दीसै दृष्टि मैं जेता, ते सब जांहिगे तेता ॥ १ ॥
रहै नाहि विष्णु ब्रह्मा महेश, नहीं रहै शेष भू नरेश ।
रहै नहि धरणि अरु आकाश, जासी मेरु मंड कैलास ॥ २ ॥
नहीं रह सरिता सागर सात, नहीं घर सूर शशि कुशलात ।
नहीं रह पवन पांणी बीर, ये सब अथिर नांही थीर ॥ ३ ॥
नहीं रह मेघ माला इंद, खासी काल करि करि छंद ।
नहीं रह धर्म धर्म का दूत, जासी माय माका पूत ॥ ४ ॥
उपज्या जाय सबही बीत, केता कहूं करि करिचीत ।
समझै सैंन मैं स्यांणा, न जांणे अन्ध निज ज्ञाना ॥ ५ ॥
कहां शंखा सि ब्रह्मा छनल, कीधो मच्छ होय निर्दलन ।
कहां गिरी मेरु कूरम जुथ्यो, धारयो पीठ सायर मथ्यो ॥ ६ ॥

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

कहां हिरणाक्ष धरणी हरी, जा हित देह बराह धरी ।
मार्यो असुर कीन्हो नास, मेटी धरित्री की त्रास ॥ ७ ॥
कहां हिरणाक हरि सूंद्रोह, कीयो पुत्र सूं अति ब्रोह ।
जब हरि धर्यो नरहिर रुप, राख्यो भक्त मार्यो भूप ॥ ८ ॥
बलिकै धारयो बावन रुप, जिग में आय जाच्यो भूप ।
सो पाताल मेल्हयो जाहि, भूपर निजर आवै नांहि ॥ ९ ॥
जोधा एक सहँसर बांह, नितही चलै छत्तर छांह ।
जाको अधिक कहिये जोर, वा सम दूसरो नहि ओर ॥ १० ॥
धरियो विप्र को अवतरा, ताकूं मार कीयो ख्वार ।
कहारे लंक को राजा, जाकै कनक को छाजा ॥ ११ ॥
खाई समंद कंचन कोट, मारयो काल एकै चोट ।
लीयो मार कै रघुनाथ, लंका चली नांही साथ ॥ १२ ॥
रह्यो नहि कंस मथुरा मल्ल, महलां बैठ करतो हल्ल ।

जाकूं कृष्ण लीन्हो मार, अब मैं कहत हूं पुकार ॥ १३ ॥
सबही गया मारण हार, धरिया देह सब अवतार ।
जासी देव अरु दांणा, न रहसी रंक अरु रांणा ॥ १४ ॥
हुवा सो कलि गया सबही, जासी होयगा अबही ।
बहता पुरुष सूं कछुं नांही, रहता धार हिरदा मांहि ॥ १५ ॥
रहता राम है रमतीत, भजिये देह का गुण जीत ।
तेरी देह भी थिर नांहि, बिनशै देखितां पल मांहि ॥ १६ ॥
यामें पांच अपरबल जोध जाकूं ज्ञान दे परमोध ।
नातो नीत सूं मति जोड, अब तूं पचीसां सूं तोड ॥ १७ ॥
गुरु का ज्ञान की समसेर, कीजे सबर बैरी जेर ।
इन कूं मार रे भाई, सुरमो राम सुख दाई ॥ १८ ॥
नहीं कोई राम बिन तेरा, झूठा जगत उर झेरा ।
नवां सूं नेह मति राखै, ये तोहि गर्भ मैं नांखै ॥ १९ ॥

बंध्यो बासना कै हेत, तांतैं जन्म फिर फिर लेत ।
निशि दिन राम कूं गावो, जामण मरण नहिं आवो ॥ २० ॥
भजन सूं बासना जलि जाय, दूजी नहीं और उपाय ।
अब मैं कही है सुण तोहि, हिरदगै धार चेतन होय ॥ २१ ॥
रसना राम कूं रटिये, सतगुरु शरण ही गहिये ।
शांसा जीव का सब जाय, रहसी ब्रह्म पद समाय ॥ २२ ॥

दोहा

यह चिन्तावणी ग्रन्थ सुण, हरि से करै सनेह ।
रामचरण साची कहै, फिर धरै न दूजी देह ॥ १ ॥
रामचरण भज राम कूं, छांडि देहादिक परिवार ।
झूठा तजि रचि साच सुं, तो छूटै जम मार ॥ २ ॥
रामचरण भज राम कूं संत कहै समझाय ।
सुख सागर कूं छाडि कै, मति छीलर दुख जाय ॥ ३ ॥

सोरठा

धरियादिक कलि जाय, शब्द ब्रह्म नांही कलै ।
रामचरण रटि ताहि, चौरासी का भय टलै ॥ १ ॥
चौरासी की मार, भजन विना छूटै नहीं ।
तातैं होइ हुंसियार, यह शीख सतगुरु कही ॥ २ ॥

इति ग्रन्थ चिन्तावणी सम्पूर्ण ॥

॥ दोहा ॥ २५ ॥ चामर छंद ॥ १०० ॥ सोरठा ॥ २ ॥
सर्व ॥ १२७ ॥ ग्रन्थ ॥ ४ ॥

रामजी राम राम महाराज.....

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

अथ ग्रंथ मनखण्डन लिख्यते

स्तुति

रमतीत राम गुरुदेवजी, पुनि तिहूं काल के संत ।
जिनकूं रामचरण की, बंदन बार अनंत (१)

दोहा

अलख निरंजन बीनऊं, लागूं सतगुरु पाय ।
मन खण्डन की जुक्ति होइ, सो मोहि द्योह बताय ॥ १ ॥
मन तन पर असवार है, गुण इन्द्री सब साथ ।
फिरै सवादां बसि भयो, क्यूं करि आवै हाथ ॥ २ ॥

चौपाई

सप्त धातु काया अस्थांन । चेतन राजा मन परधांन ॥
मन कै तीन अपरबल जोध । तामैं दोय न मांनै बोध ॥ १ ॥
पांच पयादा मनकी लार । पुनि पांचा पंच पंच आगार ॥

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

अपणा अपणा चाह्यौ भोग । ज्यूं ज्यूं नगरी बाधै रोग ॥ २ ॥
तकब नरपति इक मतो विचारयो । मन खण्डन निजमन विस्तारयो ॥
मन की चोरी निजमन पावै । नरपति आगै सब गुदरावै ॥ ३ ॥
नरपति को निज सदा हजूरी । परकृति मन मुख बांधै धूरी ॥
मैं तो हुकम राय को करि हूं । तेरी चोरी कागद धरि हूं ॥ ४ ॥
तेरे भाग राय दुख पावै । बार बार गर्भ मांही आवै ॥
चाकर चोर घणी नहि सुक्ख । जन्म मरण संग भुगतै दुःख ॥ ५ ॥
निजमन लागो मन की लार । संग न छाडै एक लगार ॥
मेरे धणी बिदा कियो मोहि । चोरी करतां पकडूं तोहि ॥ ६ ॥
तेरा पांच पयादा मारुं । रज तम दोय टूक करि डारुं ॥
सात्विक कूं मैं लेहूं फेर । काढूं नगर पचीशूं हेर ॥ ७ ॥
जब परकृति मन बाग उठावै । ज्ञान खडग लेनिजमन ध्यावै ॥
मनवो जाई आकाशां भँवै । निजमन ले करि नीचो दबै ॥ ८ ॥

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

मनवो नीची दिशा विचारै । निजमन पकडगगन की धारै ॥
मनवो करै उठण का दाव । निजमन काठा रोपै पाव ॥ ९ ॥
मनवो मुक भोगां मैं करे । निजमन उलटि अपूठो धरै ॥
विषय बासना मन का भोग । निजमन इनकूं जाणै रोग ॥ १० ॥

दोहा

सुण परकृति मन निज कहै, मुज शिर नरपति हाथ ।
तोहि चरण तल चूरि हूं, पकडूं तेरो साथ ॥ १॥

चौपाई

तब मन खाटा मीठा चाह्वै । जब निज फीका भोजन खावै ॥
मनवो ऊंचा नेतर न्हालै । तब निज चख का पडदा ढालै ॥ १ ॥
मनवो नासा चाह्वै गंध । निजमन सब देखै दुरगंध ॥
राग रंग श्रवणां करि भावै, तब निज हरि का गुण सम्भलावै ॥ २ ॥
स्पर्श इन्द्री चाह्वै भोग । निजमन गहै शील का जोग ॥

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

कर सूंमन सब काम संवारे । निजमन आरंभ सकल निवारै ॥ ३ ॥
चंचल होई चरणां सूं चालै, निज पंगो होई कभू न डालै ॥
छादन त्वचा सुहाया मांगे । निजमन सबही बस्तर त्यगै ॥ ४ ॥
तब मन पिलंग पथरणा हेरै । निज भूपर आसण करि फैरे ॥
मनवो बास महल मैं करै । निजमन आसण चोडै धरे ॥ ५ ॥
मनवो बस्ती सूं मन लावै । निजमन ले बन खण्ड मैं जावै ॥
मनवो शत्रु मित्र दोई भाखै । निजमन होउसम करि राखै ॥ ६ ॥
मनवो करै मित्र सूं मोह । जब ही निजमन ठांणै द्रोह ॥
मनवो बैर शत्रू सूं करै । तांसू निजमन हित बिस्तरै ॥ ७ ॥
मनवो माया कूं उपजावै । निजमन दृढ बैराग उपावै ॥
मनवो सत्संगति सूं भागै । निजमन उलट चौगणो लागै ॥ ८ ॥
मनवो राम भजन सूं हारै । शिर मैं निजमन मुद्गर मारै ॥
मन कूं आडो आसण भावै । निजमन उलटि खडो ठहरावै ॥ ९ ॥

ज्यूं ज्यूं मनवो ओल्हा हेरे । जहां चहां निजमन जाई धेरै ॥
कहूं न मन को लागै दाव । निजमन को छाती पर पाव ॥ १० ॥
निजमन है नरपति को दास । परकृति मन को नहीं बिसश्वास ॥
जोपरकृति मन कै चलै सुभाय । तो अनंत जूंणि मैं गोता खाय ॥ ११ ॥
जीव ब्रह्म निज एको करै । चंचल मन नहचल मैं धरै ॥
अैसैं मन कूं खण्डो भाई । यह शीख सतगुरु सूं पाई ॥ १२ ॥
मन खण्डण का यह उपाव । और न कोई दूजा दाव ॥
मनकै मतै कभू नहि चालै । मन कूं उलटि अपूठो पालै ॥ १३ ॥
सब जीवां कूंमन भर्मावे । मन कै संग दुख सुख कूं पावै ॥
सतगुरु शब्दां पकडै मन कूं । रामचरण प्रम सुख डैं जिनकूं ॥ १४ ॥
मनका मारया जो नर मरै । लख चौरासी घट वे धरै ॥
मन कूं मार मरैगा कोई । परम धाम मैं बासा होई ॥ १५ ॥

दोहा

मन खण्डै रामै भजै, तजै जगत गृह कूप ।
रामचरण तब परसिये, आतम शुद्ध स्वरुप ॥ १ ॥

सोरठा

आतम कूं नहि ब्याधि, ब्याधि रोग मन मांनिये ।
डजन ये तजी उपाधि, शुद्ध स्वरुप ते जांणिये ॥ १ ॥

इति ग्रन्थ मनखण्डन सम्पूर्ण ॥

॥ दोहा ॥ ४ ॥ चामर ॥ २५ ॥ सोरठा ॥ १ ॥
सर्व ॥ ३० ॥ ग्रन्थ ॥ ५ ॥

रामजी राम राम महाराज.....

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

समर्पण

शरणा की प्रतिपाल राम अब कीजिये
भव बूढत गह बाह काढ मोहि लीजिये
तुम हो दीन दयाल दयाकर नालियो
परिहां रामचरण सूं राम विघन सब टारियो ।। १ ।।
माया तणा विघन बहुत है राम जी
भजन करे अन्तराय भूलावे नाम जी
तुम समर्थ सब जान करू कहां विनती
परिहां रामचरण की राम न आवे हिनती ।। २ ।।
राम एक अरदास हमारी मानीयो
कामी कपटी क्रुर आपणो जाणियो
जे छोडो तुम हाथ ओर नहीं ओट जी,
परिहां रामचरण रख शरण बगस सब खोट जी ।। ३ ।।
कहां करु अरदास सकल विधी जाणियो
अन्तर्गत की पीड पीव पहचाणियो

भव मोचन भगवान ढील नहीं कीजिये
परिहां रामचरण की बांहनाथ गह लीजिये ।। ४ ।।

आरती

आरती रामचरणजी की कीजै । सुंदर छवि को ध्यान धरीजे ।। टेर ।।
निर्गुण पुरूष देह गुण न्यारा । एक ब्रह्म का करे विचारा ।।
राग द्वेष हर्ष शोक न जाके । आनन्द रूप रामरस चाखै ।।
ज्ञान भक्ति वैराग्य बतावे । शरण आये को पार लगाये ।
परमार्थ हित कलि देहधारी । अनन्त आत्मा पार उतारी ।।
रामचरणजी तारिण तरना । पोखरदास तुम्हारी शरणा ।।

गुरु स्तुति

आप हो गुरुदेव दिन पति, अगम ज्ञान प्रकाश है ।
उर नयन के तुम देव वायक, अज्ञता तिम नाश है ।।
यथा निज पद पाइयो हम, आप किरपा पूर है ।

नमोजी रिछपाल सतगुरु, काल कंटक दूर है ।।
संग सतगुरुदेवजी को, महा भागी पाय है ।
भरम कर्म अरू शर्म संशय, शोक सारों जाय है ।।
शुद्ध आतम अमल पेखे, पाय नहचो नाम को ।
अहंकृत अज्ञान भागो, रंग लागो राम की ।।
गुरु नित गुणकार प्रगट, दीन के दयाल ही ।
रामचरण चित्त चरण लीनो कियो मोय निहाल ही ।।

गुरु स्तूति

आप है गुरु परम पावन, ज्ञान धन दातार है ।
श्री स्वामी रामदयाल जी ''महाराज श्री'' अवतार है ।। १ ।।
मर्मज्ञ वेद पुराण के जाने, सभी का सार है ।
महाराजश्री की वाणी का, नित करे आप प्रचार है ।। २ ।।
महाराजश्री की पीठ पावन, पर विराजे आप है ।
कीरति विमल जग छा रही, सर्वत्र जय जयकार है ।। ३ ।।

भजन

बाबा सतगुरु की बलिहारी ।
मोहजाल सुलजाई आँटी काटी विपति हमारी ॥ टेक ॥
शरणै राखि करी प्रतिपाला दीरघ दीनदयाला ।
राम नाम सूँ लगन लगाई भान्यां भरम जंजाला ॥ १ ॥
काछ बाच का कलंक मिटाया साँच शील पीछणाया ।
स्वाद श्रृंगार न व्यापे माया निज निर्वेद धराया ॥ २ ॥
रामचरण जन राम स्वरुपा भक्ति हेत भू आया ।
किरपा करि के ज्ञान प्रकाश्या सरवण द्वार सुणाया ॥ ३ ॥

भजन

मोद भयो करुणानिधि मिलिया, खुलिया भाग हमारा हो ।
गगन मण्डल में राम निरंजन, मेरा निज कर्तारा हो ॥ टेक ॥
जासूं जोग जुरयो जन किरपा, अब नांहि होई न्यारा हो ।
अविनाशी अविचल पद दिया, किया बहु उपकारा हो ॥ १॥
अपना जान आप ढिंग लीया, जिनका जनम सुधारा हो ।

अंक मिलाय पाय रस अणभो, भेटया भय भ्रम सारा हो ।। २ ।।
निर्भय भया निरंजन शरणें, अंजन सब ही टारा हो ।
रामचरण जहाँ रमैं निरन्तर, अन्तर प्रेम उजारा हो ।। ३ ।।

राम रक्षा

जो नर राम नाम लिव लावैं ।
जाकूँ कोई भय नहिं व्यापै विघ्न विलय होया जावै ।। टेक ।।
अगल बगल का छांडि पसारा मन विश्वास उपावै ।
सर्वग सांई एक हि जाणें सो निर्भय गुण गावै ।।
राहु केतु अरु प्रेत शनिश्चर मंगल नांहि दुखावै ।
सूरज सोम गुरु अरु बुध ही शुक्र निकट नहीं आवै ।।
भैरव बीर बिजासण डाकण नरसिंह दूर रहावै ।
दिशाशूल अरु भद्रा जांणू सूण कसूण बिलावै ।।
मुष्ट दिष्ट अरु मौत अकाली जम भी शीश नमावै ।
सबलै शरणैं निर्भय वासा भगवानदास जन गावै ।।

रामजी राम राम महाराज.....